ही समझाओ, उनके मनों पर लोभ की चिकनी काई लगी है, इसलिए कोई असर नहीं होता। इस लोभ (चिकनी सिल) का इतना जबरदस्त प्रभाव है कि यहां चींटी भी चलकर फिसलती है, अर्थात् साधारण जीव तो चल ही नहीं सकता। चारों तरफ इनकी चाहनाओं की पूर्ति के लिए इनके सेवक प्रचार-प्रसार में लगे हैं। लोभ की अग्नि को धधका रहे हैं, जिससे साधारण जीव के इश्क और ईमान डोल जाते हैं तथा जीव इस कठिन रास्ते को पार नहीं कर पाता है।

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए।। ६ ।।

अब महामतिजी अपनी आत्मा से कहते हैं कि ऐसे टेढ़े रास्ते तथा स्थितियों में अवसर पाते ही हाथी की चाल, घण्टे बजाते हुए, चलो, अर्थात् यदि कोई निन्दा करता है या रास्ते में बाधाएं डालता है, तो उसकी तरफ ध्यान ही मत दो। धनी की मेहर का पाखर पहन कर इश्क और ईमान के घण्टे बजाते चलो तथा साहस का सहारा लेकर लक्ष्य की ओर संसार के मान और अपमान की तरफ से अपने को सिकोड़ कर (मुख मोड़कर) इतना छोटा बना लो कि सुई के नाके से निकल सको, अर्थात् मान और अपमान की तरफ ध्यान ही मत दो। हे मेरी आत्मा! तुम माया की सब चाहनाओं को ऐसे छोड़ दो जैसे शरीर छोड़ा जाता है और भूलकर भी इनकी तरफ ध्यान न दो, अर्थात जिन्होंने साथ नहीं निभाया उनके बारे में मत सोचो। तुम अपने ही बल से पहाड़ पर चढ़कर कूद जाओ, अर्थात साहस करके इस जागनी के कार्य में लग जाओ।

बोहोत बंध फंद धंध अजूं कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे।
निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे।। ७ ।।

अभी भी तेरे सामने इस रास्ते में झंझटें आएंगी। वह दिखाई तो देंगी पर अभी से उनका कुछ अनुमान नहीं किया जा सकता। फिर भी तू दृढ़ता के साथ ध्यान रखना कि तेरे धनी निराकार, शून्य के पार और अक्षर से परे परमधाम में हैं, जहां बिना धाम धनी की मर्जी से कोई आ नहीं सकता।

मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास।
कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पिया अग्या जाग करूं विलास।। ८ ।।

हे मेरी आत्मा! इस प्रकार के वचनों की विचारधारा से अपने तन, मन, धन को शक्तिशाली बनाकर अपने धनी पर दृढ़ विश्वास रखो। इस तरह से महामतिजी कहते हैं कि धनी के प्रेम में रम जाने पर ही धनी की आज्ञा होगी और मैं घर में जाकर धनी से आनन्द विलास करूंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १०० ॥

राग श्री सामेरी

पिया मोहे स्वांत न आवहीं, न कछू नैनों नीर।
पिया बिना पल जो जात है, अहनिस धखे सरीर।। १ ।।

हे धनी! मुझे इस तरह से शान्ति भी नहीं आ सकती। विरह से आंखों में आंसू भी नहीं आते हैं। हे धनी! आपके बिना जो पल भी बीतता है वह दिन-रात शरीर को जलाता है।

सब अंग अगनी जलके, जात उड़े ज्यों गरद।
क्यों इत स्वांत जो आवहीं, जित दुलहे का दरद।। २ ।।

इस विरह से सारे शरीर में आग लगी है। शक्तिहीन होकर धूल की तरह शरीर जलकर उड़ रहा है। जहां दूल्हे की जुदाई का दर्द हो वहां शान्ति कैसे हो सकती है?

Nijanand App

हाड़े हाड़ पिसात हैं, चकी बीच जिन भांत।
आराम ना जीवरा होवहीं, तो क्यों कर उपजे स्वांत।। ३ ।।

अन्दर ही अन्दर हड्डियां चक्की की तरह रगड़ खाकर पिस रही हैं। जब जीव को किसी तरह से आराम नहीं मिल रहा तो शान्ति कहां से मिले?

सब अंग सारन होए के, सारे सकल संधान।
अपनी इन्द्री आप को, उलट लगी है खान।। ४ ।।

मेरे सारे अंग ही दुश्मन होकर अंग-अंग में छेद करते हैं और मेरे ही गुण, अंग, इन्द्रिय उलटा मुझे खा रहे हैं।

उड़ी जो नींद अंदर की, पड़त न क्यों ही चैन।
प्यारी पिउ के दरस की, कब देखूं मुख नैन।। ५ ।।

जब अन्दर की नींद (अज्ञानता) हट गई तो फिर किस तरह से चैन पड़े? हे पिया! अब मेरी आत्मा आपके दर्शनों के लिए तड़प रही है कि कब आपको नैनों से देखूंगी?

पिया बिन कछुए न भावहीं, जानूं कब सुनों पिया बैन।
जोलों पिउ मुझे न मिले, तोलों तलफत हों दिन रैन।। ६ ।।

हे पिया! आपके बिना किसी की बात अच्छी नहीं लगती (कुछ भाता नहीं)। बस चाहना है कि कब आपके मीठे-मीठे वचन सुनूं। जब तक आप मुझे नहीं मिल जाते तब तक दिन-रात तड़पती रहूंगी।

घाटी टेढ़ी सकड़ी, तीखी खांडा धार।
रोम रोम सांगा सामिया, तामें चढ़ूं कर सिनगार।। ७ ।।

आपके मिलने का रास्ता बहुत टेढ़ा, संकरा, तलवार की धार के समान है और ऊपर से दुनियां वाले तीखे वचनों से तानें मारकर भाले के समान छेद रहे हैं। ऐसा समझते हुए भी अब मैं सब अंगों से सावचेत होकर पूर्ण उत्साह के साथ चल पड़ी हूं।

नीर खारे भवसागर, और लेहेरां मारे मार।
बेटो बीच पछाड़हीं, वार न काहूं पार।। ८ ।।

भवसागर का ज्ञान खारे जल के समान है। यह रास्ते में थपेड़े मारकर गुमराह करता है। लहरों की चोट से टापुओं से टकराती हूं, अर्थात् सहारा देने वाले सुन्दरसाथ भी बेशुमार ठोकरें मारकर गिराते हैं।

तान तीखे आड़े उलटे, और लेत भमरियां जल।
मिने मछ लडाइयां, यामें लेवें सारे निगल।। ९ ।।

लहरों की चोट ऐसी तीखी है कि आड़े आकर जल की भंवर में गिरा देती है। इसमें बड़े-बड़े मगरमच्छ निगलने को तैयार बैठे हैं।

ए दुनी दिल अंधी दिवानी, और बंधी संधों संध।
हाथों हाथ न सूझहीं, तिमर तो या सनंध।। १० ।।

यह दुनियां दिल की अन्धी है और सब कर्मकाण्ड से जर्रा-जर्रा बंधी है। यहां इतना घोर अन्धकार है कि अपने और पराए की भी पहचान नहीं होती है।

Nijanand App

धखत दाह दसो दिस, झालां इंड न समाए।
फोड़ आकास पर फिरे, किन जाए न उलंघी ताए।। ११ ।।

ऐसे हालात में मेरे अन्दर दसों दिशाओं में इस अग्नि की लपटें अपने शरीर से सही नहीं जाती हैं। इस अग्नि की लपटें इतनी तेज हैं कि मेरे पूरे शरीर में फैल गई हैं और जिनसे बचना किसी तरह सम्भव नहीं है।

घाट पाट अति सलवली, तहां हाथ न टिके पपील पाए।
पवने अगनी पर जले, किन चढ़्यो न उड़्यो जाए।। १२ ।।

किनारे की चट्टानों पर मोह-ममता की ऐसी काई लगी है कि इस पर चींटी भी नहीं चल पाती। ऊपर से लोगों की चापलूसी की बातें हवा की भांति उस आग को और धधकाती हैं। उससे न तो आगे चढ़ा जाता है और न ही पक्षी की तरह उड़कर आप तक पहुंच सकते हैं।

इत चल तूं हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए।
पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए।। १३ ।।

हे मेरी आत्मा! ऐसे विकराल रास्ते में तू श्री राजजी की मेहर रूपी पाखर ओढ़कर इश्क और ईमान के घण्टे बजाकर मस्त हाथी की चाल चल और अपने अहंकार को इतनी दूर कर दे कि सिकुड़कर सुई के नाके के छेद में से निकल जा और कोई अंग न अटके।

दीजे न आल आकार को, पिउ मिलना अंग इन।
दौड़ चढ़ पहाड़ झांप खा, कायर होवे जिन।। १४ ।।

किसी प्रकार की सुस्ती मत कर, क्योंकि इस तन से कार्य पूरा करके धनी से मिलना है, इसलिए अब पूर्ण साहस करके पहाड़ जैसे जागनी के काम में लग जा और कायर मत बन।

बोहोत फंद बंध धंध कई, कई कोटान लाखों लाख।
अंदर नजरों आवही, पर मुख न देवे भाख।। १५ ।।

इस रास्ते में अभी भी लाखों करोड़ों मुसीबतें आएंगी जिनका कोई अनुमान नहीं है, इसलिए उनका अभी कहना ही क्या?

आड़े चौदे तबक मोह, निराकार निरंजन।
याके पार पोहोंचना, इन पार पिउ वतन।। १६ ।।

चौदह तबकों (लोकों) के ऊपर निराकार और निरंजन का परदा है। इनको पार करते हुए तुम्हें अपने धनी के पास पहुंचना है।

पांउं चले ना पर उड़े, बीच तो ऐसे पंथ।
पर ए सब तोलों देखिए, जोलों ना दृष्टें कंथ।। १७ ।।

बीच में धर्म, पन्थों, पैंडों के ऐसे विकट रास्ते हैं जिनको न तो चलकर और न उड़कर ही पार करना सम्भव है। फिर भी इतना निश्चित है कि जब तंक धनी को पा नहीं लिया जाता तभी तक यह मुसीबतें नजर आती हैं।

Nijanand App

आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन।
कहे महामती कौन आवहीं, इत हुकम खसमके बिन।। १८ ।।

अब तन, मन और वचन से आपसे मिलने की मेरी आत्मा को आशा लगी है। महामतिजी कहते हैं कि इसको आपके बिना और कौन आकर पूरा कर सकता है?

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ११८ ।।

विरह के प्रकरण-राग देसांकी

तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे।
सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले।। १ ।।

मैं आपकी युवा अंगना हूं और आपके वियोग में तड़प रही हूं। कृपा करके मुझ दुलहिन को अपना दिल देकर परमधाम का मूल सम्बन्ध जानकर अपने इश्क और प्यार की शैय्या पर स्वीकार करें।

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस।
न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस।। २ ।।

आपके वियोग ने मेरा शरीर जर्जर कर दिया है। इसमें खून सूख गया है और मांस भी गल गया है। अब सांस लेना भी भारी हो गया है।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।। ३ ।।

मेरे तन की सब हड्डियां लकड़ी बन गयी हैं और सिर आपके विरह में नारियल बन चुका है। अब शरीर के मांस, मज्जा, खून और नसों को विरह की अग्नि में हवन कर देती हूं।

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार।। ४ ।।

मेरे रोएं-रोएं में आपके विरह के सूए चुभ रहे हैं और तलवार की धार (आप का विरह) से अंग टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। हे धनी! मैं आपकी अंगना आपके विरह में दुःखी हूं। आप कृपा करके मेरा हाल तो पूछ लो।

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव।। ५ ।।

आपके विरह के दर्द को वही जानता है जिसके कलेजे में विरह के घाव लगे होते हैं। इस कठोर दर्द की कोई दवा नहीं है। यह तो लगातार फैलता ही जाता है।

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।। ६ ।।

हे मेरे धनी! आपके विरह का दर्द बड़ा कठिन है। इसमें आभूषण, जला देने वाली अग्नि के समान लगते हैं। हीरे और सोने के पलंग जिस पर कोमल गद्दा बिछा होता है, वह सुख की बजाय विरह का दुःख बढ़ाते हैं।

Nijanand App